॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रभु! तू कल्याण करने वाला है। आज तू हमें क्यों प्रेरित नहीं कर रहा है। हम भी तो तेरी सृष्टि में आए हैं। संसार भी तो आपका बनाया हुआ है। भगवन्! आपने इन दुराचार और इन पाप कर्मों को क्यों रचाया? आज प्रभु! इनको न रचाते तो हम संसार में पापी न बनते। प्रभु आज हम पापी हैं। हमें अपने कंठ से लगा। आज हमें प्रेरणा देकर उन पाप भावनाओं को समाप्त करा। प्रभु! हम ज्ञानाग्नि में इन्हें भस्म करना चाहते हैं। विधाता! हम तेरी शरण के लिए महानता चाहते हैं। प्रभु! तेरी सहायता चाहते हैं। हमें वह सहायता दे, जिससे हम ब्रह्म के समीप जाएँ, हम यज्ञशाला में जाए। अग्नि प्रज्वलित करें और देवताओं को हवि दें। देवता उसे पाकर प्रेरणा देंगे जिन प्रेरणाओं को पाकर, प्रभु! हम तेरी गोद में आ जाएँगे। हे कल्याणकारी प्रभु! आप कहाँ है? आज हमारे कल्याण के लिए योजना बना। हम तेरी संसार रूपी यज्ञ वेदी पर आए हैं। हमें प्रेरणा दें। हमें महान् बना। हम वास्तविक ब्रह्मा बनें, योगी बनें। हे विधाता! आज हम अपना ही कल्याण नहीं चाहते हम संसार का भी कल्याण चाहते हैं।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 531 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 606
वर्ष : 45 44 समग्र वर्ष : 51

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. सँकल्प-शक्ति	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-14
4. विवेकी पुरुष	पूज्यपाद-गुरुदेव	15-25
5. शिक्षा प्रणाली	पूज्यपाद-गुरुदेव एवम् महर्षि महानन्द मुनि जी	26-38
5. ऋषियों के उद्‌गार		39
6. दान, पुस्तकों की सूची व प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		40-42

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेदमन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' के रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है :-

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900
website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

सँकल्प-शक्ति

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव जो सर्वत्र ब्रह्माण्ड का नियन्ता है अथवा निर्माण करने वाला है उस महान् देव की महिमा का गुणगान गाते रहते हैं। हमारे यहाँ सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के जगत् काल तक नाना वैज्ञानिक हुए परन्तु कोई वैज्ञानिक ऐसा नहीं हुआ जो इस परमपिता के ज्ञान और विज्ञानमयी जगत् को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि उस मेरे प्यारे प्रभु का इतना नितान्त, महान् विज्ञान है कि नाना वैज्ञानिक इसके ऊपर अपना विचार-विनिमय करते रहे हैं। मुझे वह काल स्मरण आता है जिस काल में ऋषि-मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके एक-एक परमाणु का जब विभाजन करते थे तो बेटा! एक परमाणु को विभक्त करने के पश्चात् यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड एक ही परमाणु में दृष्टिपात आने लगता था जैसे यह जड़-जगत् और चेतन्य जगत् हमें दृष्टिपात आता है। सर्वत्र जगत् का जो चित्रण है, जिस प्रकार **ऋषि-मुनि अपने ध्यानावस्थित अवस्था में विद्यमान हो करके इस ब्रह्माण्ड का चित्रण करते रहे हैं।**

महर्षि भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला

आओ मेरे प्यारे! मैं कुछ विज्ञान की चर्चा तो तुम्हें आज प्रकट करने के लिए नहीं आया हूँ। आजका हमारा जो वेदमन्त्र है उसके ऊपर कोई विचार-विनिमय करना प्रारम्भ करें। जब हम इन वेदमन्त्रों के ऊपर

विचार-विनिमय करना प्रारम्भ करते हैं तो सर्वत्र ब्रह्माण्ड की वार्ताएँ, सर्वत्र ब्रह्माण्ड का ज्ञान और विज्ञान हमें दृष्टिपात आने लगता है। एक समय महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज अपने आसन पर विद्यमान थे। कुछ विज्ञान की तरङ्गों को वह अपनी शाला में दृष्टिपात कर रहे थे। एक समय वह ब्रह्मचारी सुकेता और ब्रह्मचारिणी शबरी के सहित अपनी विज्ञानशाला में विद्यमान हो करके लोक-लोकान्तरों की यात्रा में जाने लगे और लोक-लोकान्तरों को दृष्टिपात करने लगे। यन्त्र विद्यमान हैं, यन्त्र में लोक-लोकान्तरों के चित्र दृष्टिपात आने लगे। कहीं नाना सूर्य दृष्टिपात आ रहे थे, कहीं उस विज्ञानशाला में नाना चन्द्रमा दृष्टिपात आ रहे थे। कहीं नाना ध्रुव उसके अस्तित्व में दृष्टिपात आने लगे। परन्तु वह नाना प्रकार की निहारिकाओं में रमण करने लगे। उनके समीप कवन्धि भी विद्यमान थे। वह विज्ञानशाला में आकश-गङ्गा का दिग्दर्शन करने लगे। एक आकाश-गङ्गा को दृष्टिपात करने के पश्चात् उन्हें दूसरी आकाश-गङ्गाएँ दृष्टिपात आने लगीं। इस ब्रह्माण्ड में इतनी अनन्त उन्हें निहारिका दृष्टिपात आने लगीं कि महर्षि भारद्वाज मौन हो गए और ब्रह्मचारियों से यह कहा, हे ब्रह्मचारियो! यह ब्रह्माण्ड अनन्तता में दृष्टिपात आ रहा है। आज हम इसके ऊपर अन्वेषण करना यदि प्रारम्भ करने लगते हैं तो मनिवरो! सर्वत्र ब्रह्माण्ड की आभाएँ हमें स्मरण आने लगती हैं।

मेरे पुत्रो! आजका हमारा पठन-पाठन हमें नाना प्रकार की निहारिकाओं में नहीं ले जा रहा है। आज मैं तुम्हें एक ऋषि के द्वार पर ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा! ऋषि-मुनि विद्यमान होकर के अपने यहाँ नाना प्रकार का अन्वेषण करते रहे हैं। मेरी पुत्रियाँ अपने आसनों पर विद्यमान हो करके लोक-लोकान्तरों की वार्ताएँ स्मरण करने लगती थीं। आओ! आज मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ जहाँ ऋषि-मुनि अपने विद्यालय में विद्यमान हो करके नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों की चर्चा करते रहे हैं।

महाराजा हनुमान और गणेश जी का चिन्तन

मुझे स्मरण आता रहता है जब महाराजा हनुमान और उनके समकालीन गणेश जी जो महाराजा शिव के पुत्र कहलाते थे, एक समय भयँकर वन में दोनों विद्यमान थे और विद्यमान हो करके वह विचार-विनिमय करने लगे। विचार-विनिमय क्या था? नाना प्रकार के यन्त्रों को जानने की इच्छा रहती थी। नाना प्रकार की जो मानव शरीर से आभा उत्पन्न होती थी, तरङ्गें उत्पन्न होती थीं उसके ऊपर विचार-विनिमय करने लगे। विचार-विनिमय करते हुए वह दोनों महाराज शिव के द्वार पर पहुँचे। भगवान् शिव ने उन दोनों से कहा, हे हनुमान! तुम क्या चाहते हो? उन्होंने कहा, प्रभु! मैं सूर्य की किरणों को एकत्रित करना चाहता हूँ और उनके द्वारा मैं अन्तरिक्ष में गति करने वाले नाना प्रकार के वाहनों का निर्माण चाहता हूँ। यह वाक्य जब महाराजा शिव ने स्वीकार किया, गणेश जी भी उनके समीप थे। उन्होंने कहा, भयङ्कर वनों में महर्षि सोमकेतु ऋषि रहते हैं। सोमकेतु के द्वार पर चले जाओ। सोमकेतु के द्वार पर जाने के लिए भगवान् शिव के चरणों को स्पर्श करके उन्होंने गमन किया।

महर्षि सोमकेतु ऋषि, हनुमान जी और गणेश जी का सम्वाद

भ्रमण करते हुए सोमकेतु ऋषि के द्वार पर पहुँचे। महाराजा सोमकेतु ऋषि महाराज ने दोनों ब्रह्मचारियों को दृष्टिपात किया और उन्हें आसन दिया और कहा, ब्रह्मचारियों! तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? उन्होंने कहा, प्रभु! हम इस सूर्य की जो नाना प्रकार की किरणें हैं, जो रात्रि को अपने गर्भस्थल में धारण कर लेता हैं हम उन किरणों को जानना चाहते हैं और उन किरणों से यानों का निर्माण करना चाहते हैं जो वायुमण्डल में गति करने वाले हों। महाराजा हनुमान ने कहा कि हम ने देवर्षि नारद और महात्मा ध्रुव का दोनों का स्मरण किया

है, दोनों के ऊपर अनुसन्धान किया है। हम उसको जानना चाहते हैं जो महाराजा ध्रुव और देवर्षि नारद दोनों विद्यमान हो करके नाना प्रकार के सूर्य लोकों के यानों का निर्माण करते रहे हैं और सूर्य की नाना प्रकार की किरणों से वह वाहन जो गति करते रहे हैं।

मेरे प्यारे! इस वाक्य को श्रवण करके सोमकेतु ऋषि महाराज ने कहा कि यह तुम्हारी इच्छा क्यों हो रही है इस प्रकार की? उन्होंने कहा, प्रभु! मानव का यह स्वभाव है कि मानव प्रत्येक वस्तु को जानकारी में लाना चाहता है। वह अपने मस्तिष्क का विकास करना चाहता है। हम भी अपने मस्तिष्क का विकास करना चाहते हैं। सोमकेतु ने कहा, हे हनुमान! हे गणेशय ब्रह्मः! विकास करना यह ह्रास है, ऋषि ने जब ऐसा कहा कि यह ह्रास है तो हनुमान बोले कि यह ह्रास किस प्रकार है? क्योंकि यह तो प्रभु की प्रतिभा है और प्रतिभा को जानने के लिए हमारा जन्म हुआ है। सोमकेतु ने कहा, हे ब्रह्मात्माओं तुम विराजो! ह्रास इसलिए है कि **मानव जो नाना विज्ञान में गति करना चाहता है, आन्तरिक जगत् को बाह्यजगत् में दृष्टिपात करना चाहता है उस मानव का मन और प्राण दोनों का विभाजन होता रहता है और मन और प्राण का जितना विभाजन हो जाता है उतना मानव अपनी साधना से दूरी हो जाता है।** जब उन्होंने यह कहा तो महाराजा हनुमान और गणेश जी ने एक स्वर में कहा कि महाराज! मानव प्रभु की सृष्टि को विचारने जब लग जाता है तो सँलग्न हो जाता है जो उसकी एक महान् साधना बन जाती है। यह जो मैं आज सूर्य की नाना प्रकार की किरणों को जानना चाहता हूँ, अपने में सँग्रहीत करना चाहता हूँ, यह जो प्रभु की कृति है, प्रभु की महिमा है उसे मैं विचारने लगता हूँ और उसकी महिमा को निहारता रहता हूँ, यह प्रभु की महानता और प्रभु के आंगन में उसकी सृष्टि को जानना मेरी एक साधना बन करके रहेगी।

जब सोमकेतु ने यह श्रवण किया तो उन्होंने कहा मन का विभाजन और प्राण के विभाजन को तुम नहीं जान पाते। उन्होंने कहा, प्रभु! जब हम सँसार में आते हैं तो मन और प्राण दोनों का विभाजन होना स्वाभाविक बन जाता है। यह जो मानव शरीर का निर्माण हुआ है इसके अग्रिम में मन और प्राण दोनों का विभाजन हो जाता है। प्रकृति तत्त्व है, ब्रह्म तत्त्व है, दोनों का सम्योग होता है, दोनों का मिलान होता है परन्तु मन और प्राण दोनों की विभक्त क्रिया बन जाती है। एक ज्ञान में और एक क्रिया में दोनों का विभक्त हो जाना अनिवार्य हो जाता है। सोमकेतु ने यह कहा, जितना भी इस पर विचारा जाएगा, मन और प्राण दोनों विभक्त होते चले जाएँगे।

जब उन्होंने ऐसा कहा तो गणेश जी ने कहा, यह जो सूर्य की किरणें हैं जिनका द्यौ-मण्डल से समन्वय रहता है क्या इसके ऊपर अन्वेषण करना, अनुसन्धान करना, इसको जानना क्या यह प्रभु की प्रतिभा नहीं है? उन्होंने कहा, यह अवश्य है। परन्तु मन की विभक्तता होती चली जाती है, विभाजन होता चला जाता है। इसको समेटने के लिए तुम आन्तरिक जगत् में क्यों नहीं दृष्टिपात करते हो? सोमकेतु और इन दोनों का यह सम्वाद होता रहा। इस सम्वाद में, इसके सन्दर्भ में अप्रताम् ब्रह्मणः उन्होंने एक वार्ता प्रकट कराई।

सुकेता ऋषि का भयङ्कर वन में अनुसन्धान

उन्होंने कहा, तुम्हें प्रतीत है एक समय मैं मध्य राष्ट्र में पहुँचा। मध्य राष्ट्र में एक सुकेता नामक ऋषि रहते थे। वह सुकेता नाम के ऋषि शान्ति से विद्यमान थे अपने आसन पर। उनकी पत्नी भी उनके समीप विद्यमान थी। मैंने दोनों महापुरुषों के चरणों को स्पर्श किया और सोमकेतु कहते हैं, मैंने उनको कहा तुम इतने महापुरुष होकर के भयङ्कर वन में क्यों विद्यमान हो? उन्होंने कहा, हम इसलिए विद्यमान हैं कुछ अन्वेषण कर रहे हैं, विचार-विनिमय कर रहे हैं। उन्होंने कहा, क्या विचार-विनिमय

कर रहे हो? हम नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों में जाने की प्रतिक्रिया बना रहे हैं। उन्होंने कहा, यह प्रेरणा तुम्हें कहाँ से प्राप्त हुई। उन्होंने कहा, यह माता-पिता के द्वार से प्राप्त हुई है। एक समय मेरे पिता की अध्यक्षता में एक सभा हुई थी, मैं उस समय गृह में विद्यमान था, मेरा बाल्यकाल था। जब नाना विचार उस सभा में विराजे मानो **ब्रह्मचरिष्यामि** पर उनका विचार हो रहा था उस समय महात्मा भुञ्जु भी आए। महात्मा भुञ्जु ने यह कहा था कि यह जो ब्रह्म है, ब्रह्मचरिष्यामि है, यह ब्रह्म कहलाता है। तो मेरे पितृ ने कहा कि यह ब्रह्मचरिष्यामि ब्रह्म तो नहीं है परन्तु ब्रह्म को जानने के इसमें अवशेष, परमाणु रहते हैं। दोनों के विचारों को श्रवण करके हम भयँकर वन में चले आए और उस ब्रह्म की आभा में रमण करना चाहते हैं जिन परमाणुओं से ब्रह्म को जाना जाता है। इन परमाणुओं के ऊपर हमारा सदैव अन्वेषण चलता रहता है। हम विचार-विनिमय करते रहते हैं। तो उन्होंने यह कहा, इन परमाणुओं के जानने से हम लोकों की यात्रा भी कर सकते हैं। हम देवपुरी में देवताओं की सभा में जाकर के देववत् को प्राप्त भी कर सकते हैं और इन्हीं परमाणुओं को जान करके हम इस सँसार की वस्तुओं को जान करके अपने में समेट करके अपने में निश्चल बन जाते हैं।

सोमकेतु ऋषि महाराज का निर्णय

मेरे प्यारे! जब सोमकेतु ऋषि ने यह वाक्य प्रकट किया तो सोमकेतु का अभिप्राय था कि मानव को इस सँसार को जानने के पश्चात् अपने अन्तःकरण में, अपनी हृदयरूपी जो गुफा है, हृदयरूपी जो यज्ञशाला है इसमें नाना प्रकार का साकल्य दृष्टिपात करके उन साकल्यों का गुण-अवगुण दोनों को अपने में दृष्टिपात करना चाहिए।

सोमकेतु से पुनः आग्रह

ऐसा जब सोमकेतु ने इन दोनों को निर्णय दिया, उन्होंने कहा प्रभु हम जो जानने के लिए आये हैं उसे हमें निर्णय कराईये। हम तो

केवल द्यौ-लोकों से आने वाली जो आभाएँ हैं, तरंगें हैं उन्हें अपने में दृष्टिपात करना चाहते हैं। उन्होंने जब यह वाक्य प्रकट किया तो सोमकेतु ने यह कहा, विराजो। वह विराजमान हो गए और वहाँ अन्वेषण होने लगा। अन्वेषण होते-होते उन्होंने सबसे प्रथम यज्ञशाला का निर्माण किया। यज्ञशाला में क्योंकि अग्नि की सप्त जिह्वाएँ होती हैं। उन सप्त जिह्वाओं को जानने के लिए उन दोनों का अन्वेषण होना प्रारम्भ हुआ सूर्य में जो नाना प्रकार की कान्तियाँ होती हैं उनको जानकर के उन्होंने एक यन्त्र का निर्माण किया जो यन्त्र सूर्य की किरणों के साथ-साथ अन्तरिक्ष में गति करने लगा।

ऋषि मुनियों की ऊँची-ऊँची उड़ाने

आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रकट करने नहीं आया हूँ। मैं ऐसे भयङ्कर वन में चला गया हूँ जहाँ ज्ञान और विज्ञान की तरँगें, एक-एक परमाणु को निगलता चला जाता है। उसकी आभा में रमण करता रहता है। शब्दों को अपने में ग्रहण करता रहता है। शब्दों के चित्रों की आभा उत्पन्न होने लगती है, वह यन्त्रों में उन्हें दृष्टिपात आने लगती हैं। आज मैं तुम्हें इन वाक्यों को इसलिये उच्चारण कर रहा हूँ कि हमारे यहाँ ऋषि-मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके ऊँची-ऊँची उड़ान उड़ते रहे हैं जिस उड़ान के उड़ने से मानव के जीवन में एक महत्ता प्रवेश कर जाती है। महत्ता की उत्पत्ति हो जाती है। नाना प्रकार के यान वायु में गति करने वाले अन्तरिक्ष में रमण करने लगते हैं। आज मैं तुम्हें विज्ञान की वार्ताएँ प्रकट करने लगा हूँ। बेटा! जाना हमें कहाँ था कहाँ चले गए हैं?

हमें विचारना यह है। मैंने एक वेदमन्त्र की तुम्हें आख्यायिका प्रकट की है और वह वेद का मन्त्र कह रहा था मेरे प्यारे! यह सूर्य की आभा इसका समन्वय द्यौ-मण्डल से रहता है उस आभा में मानव रमण करता रहता है। मानव शब्दों के साथ में प्रायः रमण करता रहा है।

महान् आश्चर्य

आओ आज मैं तुम्हें एक दूसरे मार्ग पर ले जाने के लिए आया हूँ। आजका हमारा वेदमन्त्र जहाँ विज्ञान की चर्चा कर रहा है, सूर्य मण्डल की चर्चा कर रहा है, वहाँ हम आत्मा की चर्चा करना चाहते हैं। प्रत्येक मानव आत्मा के सम्बन्ध में विचारता रहता है। आत्मा के सम्बन्ध में कि हमारी अन्तरात्मा में यह प्रकाश कहाँ से उत्पन्न हुआ है। मुनिवरो! देखो प्रत्येक मेरी पुत्री, प्रत्येक मेरा प्यारा ऋषि मण्डल यह विचारता रहता है कि हमें आत्मवित्त बनना है, आत्मा को जानना है क्योंकि सबसे महान् आश्चर्य है कि इस मानव शरीर में चेतना वास करती है। आत्मा रहता है परन्तु भोला मानव अपने को नहीं जान पाता। चेतना कार्य कर रही है, परन्तु अन्तरात्मा को नहीं जाना जाता। अन्तरात्मा कितना विशाल है। बेटा! प्रत्येक मानव को इसके ऊपर अनुसन्धान करना चाहिए यदि अनुसन्धान नहीं करता है तो मेरे पुत्रो! मानव न होने के तुल्य माना जाता है।

आओ मुनिवरो! मैं आत्मा की चर्चा करने लगूँ तो आश्चर्य आता है। जो मानव अपनी निष्ठा बना लेता है निष्ठा में ओत-प्रोत हो जाता है उस आभा में प्रवेश करने लगता है। मैं तुम्हें आत्म-लोक की चर्चाएँ, सँकल्प की चर्चाएँ प्रकट करने लगूँ तो आश्चर्य होने लगेगा। **जब मानव अपनी विचारधारा को जिस दिशा में ले जाना चाहता है वहीं वह प्रवेश कर जाता है वहीं उसे आभा प्राप्त होने लगती है।** आज मैं तुम्हें त्रेता के काल में ले जाना चाहता हूँ जहाँ मैं विज्ञान की चर्चा कर रहा था वह सूक्ष्म विषय है। आज मैं विज्ञान के ऊपर अपनी टिप्पणियाँ देना नहीं चाहता हूँ।

ऋषियों द्वारा माता कौशल्या को सँकल्प

विचार-विनिमय क्या? मेरे पुत्रो! मेरी प्यारी माता जब इस सँसार के ऊपर विचारने लगती है तो वह माता इस सँसार के ऊपर विचारती

हुई अपने में प्रवेश कर जाती है। आओ आज मैं तुम्हें त्रेता के काल की ओर ले जाना चाहता हूँ। त्रेता के काल में मुझे स्मरण है यह पुत्रेष्टि याग हुआ था। राजा दशरथ के यहाँ पुत्रेष्टि याग हुआ तो उस याग में नाना देवता, बुद्धिमान महापुरुषों का आगमन हुआ। परन्तु जब याग की समाप्ति हुई, याग के समाप्त होने के पश्चात् वहाँ दक्षिणा का प्रश्न आया। मुनिवरो! राजा ने अपनी शक्ति के अनुसार गऊ और मुद्राएँ प्रदान कीं। परन्तु माता कौशल्या के हृदय में यह आकाँक्षा उत्पन्न हुई कि मैं भी ब्राह्मण समाज को, बुद्धिमानों को गऊएँ दक्षिणा में दूँ। जब माता कौशल्या दक्षिणा देने के लिए तत्पर हुई, दक्षिणा देने लगीं तो उस समय ऋषियों ने कहा, हे देवी! हमें यह दक्षिणा नहीं चाहिए, हमें तुम से मुद्रा नहीं चाहिएँ। वह बोली तो महाराज! क्या चाहते हो? उन्होंने कहा हम सँकल्प चाहते हैं। हमें यह प्रतीत हो रहा कि इस समय अराजकता आ गई है। अराजकता को समाप्त करने के लिए महापुरुषों की आवश्यकता रहती है। आज हम महापुरुषों को चाहते हैं। **एक महापुरूष होना चाहिए इस सँसार में।** बेटा! वहाँ राजा रावण के राष्ट्र में सूर्य उदय और अस्त नहीं होता था। इतना व्यापक राष्ट्र राजा रावण का बन गया था। ऋषि-मुनियों ने कहा, हे देवी, हम यह चाहते हैं तुम्हारे गर्भस्थल से ऐसी सन्तान का जन्म होना चाहिए जिसकी आभा चन्द्रमा की भाँति शीतल और महान् बन करके अमृत को बहाने वाली हो। राष्ट्र का उत्थान करने वाली हो। महापुरुषों की रक्षा होनी चाहिए।

प्रेरणा का पूजन

माता कौशल्या ने इन वाक्यों को श्रवण किया और दक्षिणा प्रदान की। उनके विचारों की पूजा करने लगीं और कहा कि प्रभु! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव जब मैं विद्यालय में अध्ययन करती थी उस समय भी मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव मुझे यह प्रकट कराया करते थे कि **मानव को अपने जीवन में स्वतन्त्र रहना चाहिए। मानव को स्वतन्त्रता से महत्ता प्राप्त**

होती है। इसलिये मैं महान् बनने के लिए बहुत समय से अपने विचारों की कल्पना करती रही हूँ। आज भी मैं कल्पना कर रही हूँ परन्तु आप मुझे प्रेरणा दे रहे हैं मैं उस प्रेरणा का अवश्य पूजन करूँगी यदि वह समय बलवती बनेगा, मैं अवश्य पूजा करूँगी। बेटा! यह वाक्य उन्होंने श्रवण कर लिया।

वेदपाठ. . . . . .

अच्छा भगवन्! आज्ञा

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

दिनाँक : 18 नवम्बर, 1981
समय : रात्रि 7 बजे
स्थान : चौधरी राजपाल सिंह
ग्राम भैंसी, मेरठ

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ, अँकुर अपार्टमैन्ट, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

॥ ओ३म् ॥

विवेकी पुरुष

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परा से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव की प्रतिभा का वर्णन किया जाता है अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा का प्रायः वर्णन होता रहा है। तो आओ मेरे पुत्रो! आजका हमारा वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है जो इस सँसार का नियन्ता अथवा निर्माण करने वाला है। आज हम उस देव की महिमा का गुणगान गाते चले जाएँ जिस मेरे देव का ज्ञान और विज्ञान नितान्तर माना गया है। जिसके विज्ञान को कोई सीमाबद्ध नहीं कर सका है। सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना वैज्ञानिक हुए। परन्तु उन विज्ञान-वेत्ताओं में कोई भी वैज्ञानिक ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके क्योंकि उस मेरे देव का ज्ञान और विज्ञान सीमा से रहित है। वह सीमा में आने वाला नहीं है। इसीलिए आज हम अपने देव की महिमा का गुणगान गाते हुए दोनों प्रकार के विज्ञानवेत्ता बनते चले जाए।

हमारे यहाँ इस सँसार में परम्परागतों से ही दो प्रकार का विज्ञान माना है। एक आध्यात्मिक विज्ञान और द्वितीय भौतिक विज्ञान माना है। परन्तु जहाँ ज्ञान और विज्ञान की वार्ताएँ प्रत्येक वेदमन्त्र हमें दर्शाता रहता है, वहाँ आजका हमारा वेद का ऋषि, वेद का मन्त्र हमें बेटा! कुछ राष्ट्र के लिए विचार-विनिमय करने के लिए बाध्य करता रहता

है। हमने बहुत पुरातनकाल में तुम्हें यह निर्णय कराया कि हमारे यहाँ विवेकी पुरुष होने चाहिएँ, क्योंकि राष्ट्र की घोषणा करने वाला मानव, राष्ट्र के ऊपर विचार-विनिमय करने वाला और जिस भी काल में राष्ट्र के ऊपर इन तथ्यों पर विचार-विनिमय किया जाता है तो वहाँ एक ही वस्तु हमें प्राप्त होती है कि समाज में विवेक होना चाहिए और राष्ट्रीयता में वैज्ञानिक और विवेकी पुरुष होने चाहिए। **विवेकी पुरुष उन्हें कहा जाता है बेटा! जो निष्पक्ष होकर के अपनी वार्ता प्रकट करते हैं और राष्ट्र के सम्बन्ध में ऊँची-ऊँची उड़ान-उड़ने लगते हैं।** विज्ञान की उड़ान उड़ते हैं। वह यह विचारते हैं कि समाज का उत्थान कैसे हो?

ऋषि-मुनियों का चिन्तन

बेटा! जब हम इन विचारों को ले करके त्रेता के काल में चले जाते हैं, त्रेता के काल में प्रवेश करते हैं तो प्रायः हमें ऐसा दृष्टिपात होने लगता है कि उन महापुरुषों के विचार, उनकी निष्पक्षता मानव के हृदय में ग्राही बन जाती है। मुझे स्मरण है, मेरे प्यारे! महानन्द जी ने बहुत पुरातन काल में यह निर्णय कराया कि यह सँसार, यह राष्ट्र जब विज्ञान में प्रवेश कर जाता है और वैज्ञानिक बन जाता है उस काल में मानव के विचारों में एक भिन्नता आनी प्रारम्भ हो जाती है। परन्तु आज मैं उस भिन्नता के सम्बन्ध में कोई वाक्य प्रकट करने नहीं आया हूँ। केवल विचार-विनिमय क्या? मेरे प्यारे देखो राजा रावण और भगवान् राम, दो की विवेचना आती रहती है और उन दोनों में एक राशि के नामोकरण कहलाते थे। परन्तु जब राजा रावण का राष्ट्र विशाल बना तो वह धनों से हीन भी नहीं था। परन्तु राजा रावण के यहाँ आततायीपन आ गया। जब आततायीपन आ गया तो उस काल में ऋषि-मुनियों ने विचारा और विचारने लगे कि राजा रावण का यह जो आतंक है अथवा यह जो आततायीपन है यह जो मानव को त्रास

दिए जा रहा है, इसका कोई न कोई कारण हमें प्राप्त कर लेना चाहिए। अर्थात् इसको कैसे समाप्त किया जाए? क्योंकि राजा रावण के राष्ट्र में न सूर्य अस्त होता था न उदय होता था। इतना विशाल उनका राष्ट्र था, इतना विशालतम उनके राष्ट्र में प्रायः रहा।

महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज के आश्रम में सभा

मेरे प्यारे! एक सभा अयोध्या के भयँकर वन में हुई। महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज का एक आश्रम था जिसमें सभा हुई थी। वह सभा महाराजा शिव और महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज की अध्यक्षता में हुई थी। सभा में देवर्षि नारद, महर्षि वशिष्ठ, महर्षि विश्वामित्र और भी नाना ऋषि थे जैसे जमदग्नि, भारद्वाज, ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी गार्ग्यपत्य, चाक्राणी गार्गी, महाराजा अश्वल और याज्ञवल्क्य मुनि महाराज भी उस सभा में विद्यमान थे। जिसमें महाराजा दिग्ध और महर्षि कौशल गोत्र में जन्म होने वाले गार्ग्यपत्य, उद्दालक गोत्रीय ऋषि श्वेताश्वेतर, सम्भूति ऋषि महाराज महर्षि सोम कृतिभानु और महर्षि कुक्कुट और भी नाना ऋषि विद्यमान थे। उस सभा में यह विचार-विनिमय होने वाला था कि हम इस समाज में रावण के आततायीपन को कैसे समाप्त कर सकते हैं? क्योंकि जिस राजा का राष्ट्र इतना विशाल बन गया हो, उन्होंने इन्द्र जैसे राजा को विजय कर लिया हो और त्रिपुरी में भी उनका राष्ट्र था जहाँ मेघनाद राज किया करते थे। सोमतिती राष्ट्र राज्य में उनके पुत्र नरान्तक, पातालपुरी में अहिरावण और भी नाना राष्ट्र उन्होंने अपना लिए। इसलिए न सूर्य अस्त होता था न उदय होता था।

मेरे प्यारे! जब यह वाक्य उनके समीप आया तो ऋषि-मुनियों ने विचार-विनिमय किया, हमें क्या करना चाहिए? मुझे स्मरण आता रहता है जो उनका विचार हुआ। महाराजा शिव से प्रश्न किया, महाराज! आप उनके वंश के पूज्य गुरु हैं क्योंकि उन्हें आपने अस्त्रो-शास्त्रो की शिक्षाएँ

भी प्रदान की हैं। महाराजा शिव ने कहा, हाँ ऐसा तो हुआ है। भारद्वाज मुनि से भी यही कहा गया तुम क्या सहयोग दे सकते हो? उन्होंने कहा, जो भी हमसे सहयोग प्राप्त करोगे वही प्रदान करेंगे। परन्तु आततायीपन को समाज में समाप्त किया जाना चाहिए। जब वहाँ विचार-विनिमय होने लगा तो सब ऋषि-मुनियों ने महर्षि विश्वामित्र से यह कहा कि तुम धर्नुयाग करो और अयोध्या में यह जो राजकुमार हैं, राम और लक्ष्मण इन दोनों को धनुर्याग से महान् बनाओ। उनको बलिष्ठ बनाया जाए। वैज्ञानिकता से, अस्त्रो-शस्त्रो से युक्त किया जाए।

महाराजा कुम्भकरण

मेरे प्यारे! जब यह विचार चला तो महर्षि भारद्वाज मुनि ने यह कहा कि रावण का जितना भी वंश है मैं प्रायः उनको शिक्षा देता रहा हूँ, क्योंकि उनके विधाता जो कुम्भकरण हैं वह मेरे यहाँ बारह-बारह वर्षों तक विज्ञान की शिक्षा ले करके गए हैं। उनका विज्ञान इतना विशाल है, वह इतने अनुसन्धानवेत्ता हैं कि वह छः मास तक हिमालय में अनुसन्धान करते रहते हैं और छः मास तक लङ्का में, विद्यालयों में वैज्ञानिकों को शिक्षा देते रहते हैं। कुम्भकरण का इतना विज्ञान नितान्त था।

एक समय मेरे प्यारे! भारद्वाज मुनि महाराज के यहाँ ब्रह्मचारी सुकेता और महर्षि पनपेतु मुनि महाराज की कन्या शबरी इन तीनों ने एक यन्त्र का निर्माण किया था। वह यन्त्र इस प्रकार का था कि महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज के आश्रम में उसका निर्माण हुआ। उस यन्त्र में विद्यमान हो करके महाराजा कुम्भकरण बहत्तर लोकों का भ्रमण किया करते थे। बेटा! मुझे स्मरण है वह जब पृथ्वी से उड़ान उड़ते तो चन्द्रमा में जाते, चन्द्रमा से उड़ान उड़ी तो मंगल में चले गए, मंगल से उड़ान उड़ी तो बुद्ध में चले गए, बुद्ध से उड़ान उड़ी तो शुक्र में चले गए। एक ही यन्त्र में विद्यमान हो करके बहत्तर लोकों का भ्रमण किया करते थे। कितना विज्ञान महाराजा रावण के यहाँ विशालता में परणित होता रहा है।

मेरे प्यारे! एक समय हिमालय कन्दराओं में अनुसन्धान करते हुए यह विचारा क्योंकि वह नित्यप्रति याग भी करते थे। यह याग से यह विचारते रहते थे कि यह स्वर्ण की जो धातु है यह विशेष है। परन्तु मैं यह चाहता हूँ कि स्वर्ण में सुगन्धि उत्पन्न हो जाए। वह सुगन्धि कैसे ला सकते थे?

परन्तु वह इसके ऊपर विचार-विनिमय ही करते रहे, परन्तु उसमें सुगन्धि नहीं ला सके। विचारते रहे क्योंकि अनुसन्धान उनका एक कर्त्तव्य बन गया था। एक समय मेरे पुत्र ने मुझे यह वर्णन कराया कि आधुनिक समाज ऐसा स्वीकार करता है छः मास तक कुम्भकरण जी निद्रा में रहते थे और छः मास तक वह जागरूक रहते थे। मेरे पुत्र ऐसा नहीं। परन्तु वह छः मास तक हिमालय कन्दराओं में अज्ञातवास में रहते थे और छः मास विश्वविद्यालयों में वह विज्ञान की शिक्षा प्रदान करते रहते थे। मेरे पुत्रो! बहुत सी वार्ताएँ इस प्रकार की होती हैं जो साहित्यिक चर्चाओं में अभेदन हो जाती हैं परन्तु उनकी कुछ रूपरेखा भिन्न-भिन्न रूपों में बनती रहती है। आज मैं इस क्षेत्र में जाना नहीं चाहता हूँ।

महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज की शपथ

विचार-विनिमय क्या? मेरे पुत्रो! यह विचार होने लगा। भारद्वाज मुनि महाराज ने यह कहा, अगर तुम रावण के अचरित्रवाद को समाप्त करना चाहते हो तो विवेकी पुरुषों का जन्म होना चाहिए। विवेकी पुरुष होने चाहिए। क्योंकि समाज में जब तक विवेक नहीं बनता, विवेकी पुरुष नहीं होते, वेद के पठन-पाठन करने वाले पुरुष नहीं होते और उनमें विवेक न हो जब तक राष्ट्र ऊँचा नहीं बन सकता। जब यह वाक्य उन्होंने प्रकट किया तो भारद्वाज मुनि ने यह कहा, मेरी विज्ञानशाला में जितने भी वरूणास्त्र हैं, इन्द्रास्त्र हैं मेरे यहाँ नाना अस्त्रो का निर्माण किया गया। मैं राम को कोई भी परिस्थिति जान करके

मैं कोष को प्रदान कर सकता हूँ। भारद्वाज ने तो यह उस समय शपथ ग्रहण की कि जितना भी मैंने विज्ञान को कजली वनों में विद्यमान होकर के नाना यन्त्रों का निर्माण किया क्योंकि भारद्वाज मुनि ने यह कहा, मेरे यहाँ ऐसे यन्त्र हैं, एक मानव के रक्त के बिन्दु को यन्त्र में प्रदान किया जाए उस यन्त्र में मानव का चित्र आ जाता है जिस मानव का वह रक्त का बिन्दु हो। चाहे वह प्राणी इस सँसार में है अथवा नहीं परन्तु रक्त के बिन्दु से चित्रण करते रहते। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा अग्नेय अस्त्र भी मेरे यहाँ हैं। तो भारद्वाज मुनि का सब ऋषि-मुनियों ने स्वागत किया। उनके वाक्यों को अपने हृदय में ग्राही बनाया।

महाराज शिव का त्याग

महाराज शिव से यह प्रार्थना की गई, महाराज! आपने एक यन्त्र का निर्माण किया है उसका भी हमें प्रतीत है। आप इसमें क्या अपना भी सहयोग प्रदान करेंगे? तो राजा शिव ने कहा, मैंने राजा रावण को राष्ट्रपिता बनाया, उनको भिन्न-भिन्न प्रकार की विज्ञान की शिक्षाएँ दीं और उन शिक्षालयों में सदैव शिक्षा भी देता रहा हूँ। परन्तु कोई भी मानव जब अपनी आज्ञा के अनुसार उनकी आत्मा की जो प्रेरणाएँ हैं उनके अनुसार कर्म नहीं करता। वैदिक साहित्य कहता है, उस मानव को अपने स्थान में ग्राही न बनाओ। तो आज मेरा तो यह मन्तव्य बन गया है कि मैं रावण को कोई भी सहायता प्रदान नहीं करूँगा क्योंकि उनका जो जीवन है वह आततायी बन गया है। उसके जीवन में राष्ट्रवाद के प्रति जो राष्ट्र में चरित्र होना चाहिए, मानवता होनी चाहिए, सुगन्धि होनी चाहिए, वहाँ दुर्गन्धि उत्पन्न होती रहती है। तो ऐसे राष्ट्र के प्रति मेरी कोई सहानुभूति नहीं रहती। मेरे पुत्रो! जब महाराजा शिव ने यह वाक्य प्रकट किया तो प्रकट करते ही सब ऋषियों ने उनके चरणों को स्पर्श किया क्योंकि वह अध्यक्ष थे, सभापति बने हुए थे।

सब ऋषियों ने उनका धन्यवाद किया और उन्होंने कहा कि राजा रावण को यन्त्रों का एक कोष आपने प्रदान किया है। महाराजा शिव ने कहा, हे मुनिवरो! मेरे द्वारा एक यन्त्र रावण को प्रदान किया गया है जो राजा रावण, मेरे पुत्र गणेश और पार्वती की सहकारिता में यन्त्र का निर्माण हुआ है जो राजा रावण को, महारानी मन्दोदरी को गणेश और पार्वती को प्रतीत है। वह यन्त्र कैसा है? वह यन्त्र ऐसा है कि यन्त्र विद्यमान है, शत्रु से संग्राम कर रहा है। वह यन्त्र उसे शक्ति प्रदान कर रहा है, उसी नामोकरण से शक्ति प्रदान कर रहा है, शत्रु से विजय नहीं हो रहा है। वह विजय होने वाला नहीं। परन्तु मैं जब कोई ऐसा मूलक बनेगा तो मैं उसके कारण को निश्चित प्रकट कर सकता हूँ। इतना मैं त्याग कर सकता हूँ। राजा शिव के इन वाक्यों को पान करके महाराजा विश्वामित्र बहुत प्रसन्न हुए।

महाराजा विश्वामित्र से प्रार्थना

सब ऋषियों का विचार विनिमय होता हुआ, महाराजा विश्वामित्र से प्रार्थना की कि तुम धनुर्याग करो। ऋषि ने वह वाक्य स्वीकार कर लिया।

वह सभा इन विचारों को ले करके समाप्त हो गई और यह विचार-विनिमय निश्चित हो गया कि यह जो राजा रावण आततायी बन रहा है, वैज्ञानिक बन करके साधारण मानव को जो त्रास दिया जा रहा है वह समाप्त होना चाहिए। यह निश्चय हो करके सभा विसर्जन हो गई। अपने-अपने आश्रमों को ऋषि-मुनि जा पहुँचे।

महाराजा शिव के द्वार राजा रावण का आगमन

राजा रावण को भी सभा का कुछ प्रतीत हुआ। उन्हें यह प्रतीत हो गया था कि सभा हुई है महाराजा शिव की अध्यक्षता में। राजा रावण ने जब सभा की वार्ताएँ स्वीकार कर ली तो वह महाराजा शिव के द्वारा पहुँचे। हिमालय में पहुँचे और जहाँ शिव रहते थे उस स्थान

में उनके चरणों में ओत-प्रोत हो गए। कहा कि महाराज आपकी कोई सभा हुई है। उस सभा की वार्ता श्रवण करने के लिए मैं आपके समीप आ पहुँचा हूँ। **राजा शिव ने कहा वह जो सभा हुई उसकी वार्ता, उसके विचारों से मैं तुम्हें अवगत कराऊँगा नहीं** क्योंकि वह सभा ऐसे-ऐसे आततायी को समाप्त करने के लिए है। तुम आततायी हो और यदि तुम सुचरित्र हो तो तुम्हें किस प्रकार का सन्देह हुआ है? यह सन्देह तुम्हें नहीं होना चाहिए और **यदि तुम आततायी हो तो तुम्हारा संहार किया जाएगा, तुम्हारा विनाश होगा।** महाराजा शिव यह वाक्य प्रकट करके मौन हो गए।

महाराजा विश्वामित्र का धनुर्याग

मुझे स्मरण है महाराजा विश्वामित्र को यह निश्चय हो गया था कि उन्हें धनुर्याग करना है। अब राजा रावण ने यह विचारा कि धनुर्याग को समाप्त करना चाहिए। धनुर्याग करने के लिए राम-लक्ष्मण को दण्डक वन में ले गए तो वहाँ धनुर्याग की यज्ञशाला थी। यह यज्ञ भी कई प्रकार के होते हैं। धनुर्याग होता है, वाजपेयी याग होता है, अग्निष्टोम याग होता है, ब्रह्मयाग होता है, विष्णु याग होता है, शिव याग होता है, देवी याग होता है, पुत्रेष्टि याग होता है, भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों के चयन महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने प्रकट किए हैं। आज मैं उन यागों की चर्चा तो करने नहीं आया हूँ, वास्तव में यह विचार देने के लिए आया हूँ कि धनुर्याग क्या है? **महर्षियों ने, विश्वामित्र ने राम और लक्ष्मण को धनुर्याग की रक्षा करने के लिए नियुक्त कराया तो वह रक्षा करते रहे।** धनुर्याग चलता रहा। छः मास तक वह याग चला।

महर्षि भारद्वाज मुनि आश्रम में प्रवेश

छः मास के पश्चात् महर्षि विश्वामित्र उस याग को पूर्ण करने के पश्चात् भारद्वाज मुनि आश्रम को प्रस्थान किया और महर्षि भारद्वाज

मुनि के यहाँ पहुँचे। महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने महर्षि विश्वामित्र का स्वागत किया। वहाँ बेटा! राजा रावण भी आ पहुँचे। उन्होंने कहा प्रभु! यह क्या रचना रच रही है? भारद्वाज मुनि महाराज ने कहा यह तो कोई रचना नहीं है। यह तो विज्ञान की उड़ान है। कोई भी विज्ञान की उड़ान उड़ सकता है। धनुर्याग भी विज्ञान की उड़ान है और तुम्हारे यहाँ जो विज्ञान की उड़ान लङ्का में उड़ी जा रही है वह भी विशाल उड़ान है। वैज्ञानिक किसी की सम्पदा नहीं है। वैज्ञानिक किसी राष्ट्र की सम्पदा नहीं। वह निष्पक्ष हो करके किसी वस्तु के ऊपर चिन्तन और मनन करता है और उसको साकार रूप देता रहता है। इसीलिए राम और लक्ष्मण दोनों यहाँ आए हैं विश्वामित्र के सहित। वह धनुर्याग के सम्बन्ध में कुछ प्रश्न करना चाहते हैं।

मेरे प्यारे! उन्होंने विचार-विनिमय प्रारम्भ किया तो भगवान् राम ने, ब्रह्मचारी सुकेता ने, ब्रह्मचारिणी शबरी ने, गार्ग्यपत्य ने एक यन्त्र का निर्माण किया था उस काल में और वह यन्त्र था जिसको **अहिल्या कृतिभा यन्त्र** कहते हैं। अहिल्या-कृतिभा यन्त्र उसे कहा जाता है जो अहिल्या के गर्भ को जानता है। अहिल्या यहाँ वैदिक साहित्य में पृथ्वी का नाम है। अहिल्या के दस-दस योजन नीचे जैसा खनिज विद्यमान है उस खनिज को वह दृष्टिपात कराता रहता है। भगवान् राम ने उस यन्त्र को जानने का प्रयास किया। उस यन्त्र को जाना और जानने के पश्चात् वह अहिल्या का उद्धार करने वाले बने। अहिल्या का उद्धार क्या है? मुनिवरो! भूमि पड़ी हुई है। उस पर अन्न उत्पन्न नहीं हो रहा है, अनुसन्धान नहीं हो रहा है। राष्ट्र में खाद्य की सूक्ष्मता है। तो भगवान् राम ने अहिल्या का उस यन्त्र की सहायता ले करके उद्धार किया, कल्याण किया।

पूजा का अर्थ

मेरे प्यारे! सदैव प्रत्येक मानव को विचारना चाहिए कि **पूजा का अर्थ है उसको सदुपयोग करना।** जैसे कोई मानव अग्नि की पूजा

करना चाहता है, उसका सदुपयोग होना चाहिए। जैसे कोई मानव जल की पूजा करना चाहता है तो जल का सदुपयोग होना चाहिए क्योंकि जल में प्राण है। वह नाना प्रकार के रसों का स्वादन कराता रहता है। इसी प्रकार माता वसुन्धरा को सदुपयोग में लाना है तो उसके खाद्य और खनिज को जान लेना चाहिए। वह उसकी पूजा है। पूजा का अर्थ है कि जो उसका सदुपयोग करता है।

राष्ट्र का उत्थान

आओ मेरे पुत्रो! आजका विचार तो मैं विशेष देने नहीं आया हूँ। विचार-विनिमय क्या? प्रत्येक मानव राष्ट्र की चर्चा करता है, राष्ट्र के प्रति नाना प्रकार की उड़ान उड़ता है। हमने अपने पुत्र से कई समय यह वर्णन कराते हुए कहा कि सँसार में ऐसे विवेकी निष्पक्ष होने चाहिए जैसे भारद्वाज, विश्वामित्र, वशिष्ठ जो ब्रह्मवेत्ता भी थे। विज्ञान में रमण करने वाले, राष्ट्रों का उत्थान करते रहते हैं। क्योंकि राष्ट्र वैसे ही ऊँचा नहीं बनता है। राष्ट्र ऊँचा बना करते हैं चरित्रवानों से, महापुरुषों से जो विवेकी पुरुष होते हैं, वेद की ध्वनि को ले करके राष्ट्र में जो प्रसार करता है, राष्ट्र उसके आधार पर रमण करता है तो राष्ट्र महान् और पवित्र बन जाता है।

मेरे पुत्र महानन्द जी किसी-किसी काल में प्रेरित करते रहते हैं, कहीं-कहीं वेद का मन्त्र भी प्रेरणा देता रहता है। विचार-विनिमय यही कि ऋषियों की सभा में जो विचारगोष्ठी होती रही है, आज हम उसे प्रकट कर रहे थे। आजका विचार यही कि **भगवान् राम, विश्वामित्र, लक्ष्मण, भारद्वाज मुनि महाराज के यहाँ लगभग तीन वर्ष रह करके उन्होंने नाना प्रकार के यन्त्रों को जानने का प्रयास किया।** नाना यन्त्रों का निर्माण भी किया और अस्त्रो-शस्त्रो की शिक्षा उन्होंने ग्रहण की और उन्होंने धनुर्याग किया। धनुर्याग का अभिप्राय क्या? जो विश्वामित्र ने किया। उस याग की रक्षा करने वाले राम और लक्ष्मण

दोनों बनाए। क्योंकि **रक्षा वही कर सकता है जो निष्पक्ष और श्रद्धामय बन करके समाज को उन्नत बनाने के लिए अपने जीवन की आहुति दे देता है।**

यह है बेटा! आजका वाक्य। आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय क्या? कि हमें विवेकी बनना होगा। मेरी प्यारी माताओं के शृंगार की रक्षा उस काल में होती है जिस काल में मुनिवरो! विवेकी पुरुष होते हैं, महापुरुष होते हैं और वह विवेक से इस समाज की समस्याओं पर विचार-विनिमय करते हैं और राष्ट्र को, राजा को अपनी वार्ता प्रकट कराते रहते हैं।

आओ मेरे पुत्रो! हमारे यहाँ धनुर्याग हो और विज्ञान हो और विज्ञान की तरङ्गों में मानव रमण करने वाला हो। यह है बेटा! आजका वाक्य। अब मुझे समय मिलेगा तो शेष चर्चाएँ कल प्रकट करेंगे।

आज के विचार प्रकट करने का अभिप्राय यह कि मानव को अपने-अपने विचारों में महान् बनना चाहिए। प्रभु का चिन्तन करते हुए वैदिक ध्वनि को, उसके ज्ञान और विज्ञान को सदैव अपने में धारण करना चाहिए। यह है बेटा! आजका वाक्य। अब मुझे समय मिलेगा तो शेष चर्चाएँ कल प्रकट करेंगे।

वेदपाठ. . . . . .

अच्छा भगवन्! आज्ञा

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

दिनाँकः 9 अक्टूबर, 1981
स्थान : श्री हरिसिंह
नई-दिल्ली

॥ ओ३म् ॥

शिक्षा-प्रणाली

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव जो यज्ञोमयी माना गया है, जिसका यज्ञ ही आयतन माना गया है, उस देव की महिमा का हम गुणगान गाते चले जा रहे थे क्योंकि यह जो ब्रह्माण्ड है यह एक प्रकार की यज्ञशाला है और इस यज्ञशाला में रमण करने वाला प्रभु है, अतः यज्ञशाला ही उस मेरे प्यारे प्रभु का आयतन माना गया है। वह उसका लोक है जिससे ''लोकाम् ब्रीही'' कहा। **परमपिता परमात्मा को कोई मानव दृष्टिपात करना चाहता है तो अपनी ही यज्ञशाला में, अपने मानव शरीर को एक यज्ञशाला के रूप में जाने और उस यज्ञशाला को जो किसी का आयतन बना हुआ, वह ब्रह्म का शरीर माना गया है, वास करने की स्थली है।**

प्रभु की प्रतिभा

मुनिवरो! हमें उस ब्रह्म की उपासना और उसको हमें दृष्टिपात करना है तो मुनिवरो! उसके आयतन को अपने में ग्रहण करो। अपने में धारण करते चले जाओ तो ब्रह्म तुम्हें प्रतीत होने लगेगा। उस ब्रह्म की आभा को और भी दृष्टिपात करते चले जाओ। सूर्य का प्रकाश नहीं, चन्द्रमा का प्रकाश नहीं है परन्तु तारा मण्डलों की एक छटा है उसका प्रकाश और उसका जो प्रकाश है उसके ऊपर नेत्रों से उनको निहारते रहो। बेटा! उसको निहारने से प्रभु की प्रतिभा जो गति कर

रही है लोकों में, तारा-मण्डलों में, वह तुम्हें कुछ काल के पश्चात् अनुभव होने लगेगी। उस ब्रह्म का आयतन जो यह ब्रह्माण्ड है अथवा लोक-लोकान्तर हैं यह सूत्र रूप में, एक ब्रह्माण्ड में पिरोया हुआ दृष्टिपात आने लगेगा। मुझे बहुत सी ऋषि-मुनियों की वार्ताएँ स्मरण आती रहती हैं जिन्होंने इस सँसार का साक्षात्कार अपने में दृष्टिपात किया क्योंकि प्रत्येक मानव को करना भी चाहिए। क्योंकि हम उस प्रभु के राष्ट्र में हैं और जब हम प्रभु के राष्ट्र में हैं तो उस राष्ट्रपिता की जो नियमावली है हम यज्ञोमयी श्रेष्ठ कार्यों में करते चले जाएँ क्योंकि **यज्ञ को हमारे यहाँ सर्वत्र श्रेष्ठ कर्म माना है।** सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके बेटा! ऋषि-मुनि इसी यज्ञ की प्रतिभा का गान गा रहे हैं। आदि ब्रह्मा ने भी इसका गान गाया। अंगिरस ऋषि-मुनियों ने भी, सप्तऋषि भी होता बन करके याग करते रहे हैं। आज मैं विशेष चर्चा तो प्रकट नहीं करूँगा, केवल कुछ प्रेरणाएँ प्राप्त हो रही हैं।

मेरे प्यारे! **यहाँ याग के द्वारा विज्ञान को जाना जाता है।** यहाँ याग के द्वारा सूर्य विद्या को जाना जाता है और याग से योगी बनते हैं। मानव अपनी नाना त्रुटियों को त्याग करके एक महान् क्षेत्र में रमण करने लगता है। मेरे पुत्रो! इससे पूर्व शब्दों में हम सूक्ष्म वार्ताएँ विज्ञान की प्रकट कर रहे थे। बहुत सूक्ष्म चित्रण हो रहा था। लोकों में अपने पूर्वजों के दर्शन चित्रों के द्वारा हमारे यहाँ ऋषि-मुनि किया करते थे और उनका चित्रण करते अपने जीवन को महान् और पवित्र बनाने का प्रयास करते रहे हैं।

आज मेरे प्यारे महानन्द जी भी दो शब्द उच्चारण करेंगे परन्तु उससे पूर्व सँसार में, अपनी आभा में रमण करते हुए परमपिता परमात्मा की प्रतिभा अथवा उसको विज्ञानमयी स्वरूप स्वीकार करना चाहिए। क्योंकि परमात्मा एक सूत्र रूप में गति करता रहता है। जैसे माला है, माला में दो वस्तुओं का समावेश है। जैसे सूत्र में मनके पिरोये

हुए होते हैं और मनके और सूत्र के समन्वय होते ही माला बन जाती है। इसी प्रकार यह जो ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आ रहा है यह जड़वत् प्रकृति और चैतन्य एक सूत्र दोनों के समन्वय होते ही तृतीय शब्द उत्पन्न हो जाता है जिसे हम सृष्टि कहते हैं अथवा रचना कहते हैं। तो हमें उस प्रभु के जो इस प्रकृति का सूत्र बना हुआ है, जड़वत् को सन्निधान मात्र से उसका क्रियाकलाप चल रहा है। केवल सन्निधान मात्र ही है। उस प्रभु का हम अपने से भी सन्निधान करते रहें तो हमारा जीवन महत्ता को प्राप्त होता हुआ शुद्ध स्वरूप आभा में मानव गति करने लगता है।

आज मैं विशेष चर्चा प्रकट न करता हुआ, केवल यह कि हम परमपिता परमात्मा की उपासना करते चले जाएँ और यज्ञोमयी श्रेष्ठ कर्म करते हुए देवताओं को प्रसन्न करते चले जाएँ। तो अब हम अपने विचारों को विराम देना चाहते हैं। मेरे प्यारे महानन्द जी अपने उद्गम विचार राष्ट्रीयता पर देते रहते हैं।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्गार

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कुछ यागों की चर्चाएँ कर रहे थे। परमपिता परमात्मा के सूत्रमयी विज्ञान की चर्चा करते हुए हमें मुग्ध कर रहे थे। क्योंकि इनका परम्परागतों का जो ज्ञान है वह ज्ञान-विज्ञान से गुथा हुआ रहता है परन्तु उसको धारण करने वाला मानव इस सँसार में सूक्ष्म है क्योंकि हम भी जब उनके ऊपर उनकी विचारधाराओं पर विचार-विनिमय प्रारम्भ करने लगते हैं तो हमारा एक ही परिणाम होता है कि हम मौन हो जाते हैं। जहाँ हमारी यह आकाशवाणी जा रही है उस स्थली पर यागों का चलन दृष्टिपात कर रहे थे। हमारा अन्तर्हृदय प्रसन्न हो रहा था, उद्गान गाने वाला उद्गान गा रहा था और चित्त में प्रसन्नता हो रही थी। मैं अपने यजमान याज्ञिक पुरुषों को सदैव यह कहा करता

हूँ कि उनका मनोबल और गृह में सदुपयोग उसी प्रकार होता रहे और यजमान की जो शुभ कामनाएँ हैं वह पूर्ण होती रहें। उनके जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। वह अपने सौभाग्य को चाहते हैं कि लक्ष्मी का, इस द्रव्य का सदुपयोग करते हुए देवताओं को हुत देते हुए, देवताओं को प्रसन्न करते हुए हम अपने सौभाग्य की कामना करते हैं, हमारा सौभाग्य अखण्ड बना रहे। परन्तु आज जहाँ यज्ञ की चर्चाएँ होती हैं वहाँ शिक्षा प्रणाली ने हमारे सम्मुख आ करके, उनका चित्र बन करके हमारे नेत्रों के समीप आती रहती है, मैं उस काल को दृष्टिपात करता रहा हूँ जिस काल में राजा के राष्ट्र में प्रत्येक मानव ज्ञान और विज्ञान की चर्चा करता रहा है वह ऐसा स्पष्टीकरण और अपने में अद्भुत ज्ञान और विज्ञान की चर्चा करता रहा है समाज में।

गुरु शिष्य परम्परा

मुझे पूज्यपाद गुरुदेव की आज्ञा से सोनक देश में त्रेतकेतु राजा के यहाँ जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। **पूज्यपाद गुरुदेव ने विद्यालय में किसी आचार्य के दर्शनार्थ के लिए मुझे प्रेरित किया।** जब मैं सौनक राष्ट्र में त्रेतकेतु राजा के राष्ट्र में जो विद्यालय था उसके द्वार पर पहुँचा तो वहाँ आचार्यों से कुछ चर्चाएँ होने लगीं। ब्रह्मचारियों ने अपनी वार्ताएँ प्रकट कीं। जब ब्रह्मचारियों से शारीरिक विज्ञान के ऊपर चर्चाएँ हुई तो उन्होंने प्रसन्न हो करके सर्वत्रता का परिचय दिया कि हमारे शरीर में नाना स्तम्भ माने गए हैं। मैंने प्रश्न किया, ब्रह्मचारियों के मध्य में कि मानव के शरीर के कितने स्तम्भ होते हैं? उन्होंने चौबीस खम्भों का मुझे वर्णन कराया और उन चौबीस खम्भों में दस प्राण की आभाएँ हैं और दस इन्द्रियाँ हैं, मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार का उन्होंने वर्णन किया। जब ब्रह्मचारियों से उसका उत्तर मुझे भली-भांति प्राप्त हो गया तो मैं प्रसन्न हो गया। ब्रह्मचारी का चरित्र तब तक ऊँचा नहीं बन सकता जब तक उसको अपने शरीर का बोध नहीं होता,

उसको अपनी इन्द्रियों का बोध नहीं होगा, कौन-कौन सी इन्द्रिय क्या-क्या कार्य करती है? किसकी प्रेरणा से कौन सी इन्द्रिय अपना क्रियाकलाप प्रारम्भ कर देती है? जब तक यह विद्यालयों में ज्ञान ब्रह्मचारियों को प्रदान नहीं करते, उनको नहीं प्राप्त होगा तो वह चरित्रवान प्राणी नहीं बन सकता। क्योंकि ब्रह्मचर्य विद्यालयों से प्राप्त होता है। विद्यालय में आचार्यजनों को चाहिए, कि शरीर के सर्वत्र ज्ञान का उन्हें बोध कराएँ। हमारा शरीर एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में माना गया है। जैसे यज्ञशाला में यजमान पत्नि सहित विद्यमान हो करके याग करते हैं, देवताओं को प्रसन्न करते हैं, देवताओं की आभा में अपने-अपने देवताओं को निहारते रहते हैं। इसी प्रकार जब मैं विद्यालय को ''ब्रह्मचार्यतम् वृताम वृहे'' विद्यालयों में याग होते और याग के पश्चात् उन्हें उपदेश दिया जाता, हे ब्रह्मचारियों! तुम महान् और पवित्र बनने के लिए, अपने मानवीयत्व को जानने के लिए और दर्शनों को जानने की इच्छा प्रकट करो। तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मैंने ब्रह्मचारियों से वार्ता प्रकट की, उन्होंने शारीरिक विज्ञान सब प्रकट करा दिया और किस-किस लोक से, किस-किस मण्डल से, किन-किन इन्द्रियों का समन्वय रहता है? किस काल में यह दसों प्राण बाहरीय जगत् और आन्तरिक जगत् में क्या-क्या कार्य करते हैं? जब तक ब्रह्मचारी को यह बोध नहीं होता और वह क्रियात्मक नहीं होता, तब तक ''ब्रह्मचरिष्यामि'' हम ब्रह्मचर्य की रक्षा नहीं कर सकते।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे यह ज्ञान-विज्ञान कराया, क्योंकि यह सब विद्याएँ वेद से प्राप्त होती हैं। परन्तु वेदों का अध्ययन, वेदों की आभाएँ और क्रियात्मक जीवन होना चाहिए। यह मैं त्रेतकेतु राजा के यहाँ दृष्टिपात करता रहा हूँ सौनक राष्ट्र में। आधुनिक जगत् और वर्तमान का काल जब मुझे स्मरण आता है तो मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के सम्मुख आ करके रूदन करता रहता हूँ और यह उच्चारण करता रहता हूँ कि आज जो गुरु-शिष्य परम्परा है वह कहाँ चली गयी? जब

मैं आधुनिक काल के विद्यालयों में प्रवेश करता हूँ, गुरुओं से यह प्रश्न करता हूँ कि शरीर के कितने स्तम्भ हैं? तो उत्तर नहीं प्राप्त होता। ब्रह्मचारियों के मध्य में जाता हूँ तो वह अपवाद कह करके यह उत्तर देते हैं कि हम नहीं जानते। परन्तु वह अपवाद में ले जाते हैं तो इसका दोषी कौन है? यह दोषारोपण कहाँ से प्राप्त होता है? यह राष्ट्र की परम्परा में सूक्ष्मता है। हमें विद्यालयों को ऊँचा बनाना है। विद्यालयों से राष्ट्रीय प्रभुता का जन्म होता है। आचार्य गुरु शिष्य की परम्परा से यह सँसार उद्बुद्ध होता है और राष्ट्र की आभा उत्पन्न होती है। इसके ऊपर विचार होना चाहिए।

पुरातन काल के विज्ञान के युग में **मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने एक समय मुझे पूज्यपाद रेगणी भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला में प्रवेश कराया।** नाना प्रकार की विद्याओं को, भौतिकवाद को जानने का प्रयास किया। विज्ञान हमें निर्भयता देता है, अभय देता है कि वह भयभीत न हो, सँसार में विजयी हों।

आज का वैज्ञानिक

परन्तु आजका विज्ञान क्या कर रहा है? समाज के आत्मबल को नष्ट कर रहा है। आज के विज्ञानवेत्ताओं के समीप जाते हैं तो आजका जो मानवीय दर्शन है उसके ऊपर चिन्तन न होता हुआ, उसके ऊपर मनन न होता हुआ वह समाज को भय दे रहा है–यह बार-बार यह उच्चारण कर रहा है कि अब विश्व संग्राम होने वाला है। अब यह समाज नष्ट होने वाला है। अब प्रलय होने वाली है। जब आजका वैज्ञानिक इन वाक्यों को प्रकट करता है मैं मन में मग्न होता रहता हूँ यह कहता रहता हूँ इस मानव समाज को क्या हो गया है? आजका यह मानव कहाँ चला गया है? आजका मानव त्रास क्यों दे रहा है समाज को? आगे आने वाला जो समाज है वह प्रभु के ऊपर आजका समाज नहीं त्याग रहा है क्योंकि आगे आने वाला, भविष्य को जानने

वाला प्रभु है और प्रभु ने इस राष्ट्र का निर्माण किया है। वह इसके भविष्य को अच्छी प्रकार जानते हैं, परन्तु मानव समाज अपने-अपने सूक्ष्म-सूक्ष्म चमत्कारों में आ करके, वह आवेश में आ करके समाज को त्रास दे रहा है। यह त्रास नही देना चाहिए। इस त्रास से मानव का आत्मबल समाप्त हो जाएगा। आत्मबल जब समाप्त हो जाता है तो सँसार की मृत्यु हो जाती है, यह समाज नहीं रह पाता। तो इसीलिए मैं यह उच्चारण कर रहा हूँ।

पुरातन विज्ञान और आज का विज्ञान

मैं आज गुरुदेव को यह परिचय देने आया हूँ कि समाज को, अपनी राष्ट्रीयता को ऊँचा बनाते हुए, विद्यालयों को ऊँचा बनाते हुए चलना है क्योंकि विद्यालयों से ही विज्ञान का जन्म होता है। वैज्ञानिक बनते हैं, उड़ान उड़ने वाले बनते हैं। वैज्ञानिकों को यह चाहिए, समाज को ऊँचा बनाना है तो समाज को ऊर्ध्वा दशा में ले जाएँ और विज्ञान का सदुपयोग होने लगे। राष्ट्र में सात्विकता आ जाए विज्ञान के द्वारा। वह कैसे आती है? जब नाना चित्रवलियों का निर्माण राष्ट्र में हो जाता है। वैज्ञानिक कर लेते हैं परन्तु यह कोई आश्चर्य नहीं है। एक मानव का शब्द है। शब्द के साथ में चित्र है मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कल उच्चारण कर रहे थे कि इतना ऊर्ध्वा में विज्ञान कि जो एक यन्त्र में अपने महापुरुषों के अपने सौंवे महापिता के यन्त्रों में चित्र आ जाते हैं। पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया एक रक्त के बिन्दू से जिस मानव का रक्त का बिन्दू है उसका साक्षात्कार हो जाता है। आधुनिक विज्ञान में जाता हूँ तो आजका वैज्ञानिक इकाई में रमण कर रहा है। परन्तु पूर्व के भारद्वाज मुनि की विज्ञानशालाएँ, यहाँ महाराजा कुम्भकरण की विज्ञानशाला है, उन विज्ञानशालाओं को दृष्टिपात करके आज की विज्ञानशालाएँ इकाई में रमण कर रही हैं। पूर्व का मानव, पुरातन काल का मानव यहाँ से उड़ान उड़ता है, चन्द्रमा की यात्रा कर रहा है।

चन्द्रमा से उड़ान उड़ी है मंगल लोकों में चले गए। नाना लोकों का भ्रमण करते रहे। परन्तु एक यन्त्र जो बहत्तर लोकों में भ्रमण करने वाला और वह पुनः पृथ्वी मण्डल पर आ जाए। आजका वैज्ञानिक केवल चन्द्रमा तक पहुँचा है। कुछ कक्षों में यन्त्र रमण कर रहे हैं, कुछ मंगल के कक्ष में रमण कर रहे हैं आज के विज्ञान में। परन्तु पूर्व का विज्ञान इतना महान् रहा है कि सूर्य की परिक्रमा करने वाले यन्त्र थे और शनि की परिक्रमा करने वाला यन्त्र था।

आजका विज्ञान इस पृथ्वी के, सूर्य के गर्भ में तेरह लाख पृथ्वियों को जान पाया है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने तीस लाख का वर्णन किया है। आजका विज्ञान केवल शनि को प्रकाश देने के लिए पाँच सूर्य कहता है। परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने इसके ऊपर टिप्पणी की और यह कहा कि **शनि को बहत्तर सूर्य प्रकाश देते हैं।** तो आजका विज्ञान मुझे इकाई दृष्टिपात आ रहा है परन्तु ऋषि-मुनियों की विज्ञानशालाएँ इतनी महान् रही हैं।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मानव दर्शन का अभाव

आज जब हम वेद की धाराओं को नहीं अपनाना चाहते, वेद रूपी प्रकाश से यह विज्ञान उत्पन्न होता है क्योंकि वेद एक प्रकाश है। **ज्ञान का नाम वेद है** और वेद रूपी प्रकाश को अपनाने वाला मानव ऊँची उड़ान उड़ता है। विज्ञानमयी उड़ान उड़ने वाला है, आजका विज्ञान ब्रह्मचर्य के ऊपर बल नहीं देता। ब्रह्मचरिष्यामि के ऊपर बल नहीं देता परन्तु पूर्व का वैज्ञानिक ब्रह्मचारी रह करके उड़ान उड़ता था इसलिए मैं यह परिचय दे रहा हूँ कि आधुनिक जो जगत् है मैं यह मानता रहता हूँ, मैंने पूज्यपाद गुरुदेव को प्रकट कराया। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि आजका मानव अपने में बहुत दुःखित हो रहा है। आजका राष्ट्र, इस सँसार का राष्ट्र अपने में बहुत दुःखित हो रहा है क्योंकि समाज को वह चरित्र नहीं दे रहा है। पूर्व के राजा वैज्ञानिकता को

लेते हुए समाज को चरित्र देते रहे हैं। चरित्र विद्यालयों से निर्माणित होता रहता है। परन्तु आजका जो राष्ट्र है वह विद्यालयों से निषकृय ब्रह्मचारियों को जन्म दे रहा है। निष्कर्म समाज बन रहा है, ब्रह्मचर्य को नष्ट करने वाला। आज जब मैं विद्यालयों में प्रवेश करता हूँ और ब्रह्मचर्य की चर्चा करता हूँ तो उसे अपवाद कह करके, उसको विनोद में कह करके दूरी कर देते है। परन्तु ''ब्रह्मचरिष्यामि'' इससे मानव को बोध होता है, सँसार का ज्ञान और विज्ञान इसके द्वारा आता है।

मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह प्रकट कर रहा हूँ, हे गुरुदेव! यह सँसार कहा चला गया है? विज्ञान की तरंगों में, ज्ञान की तरंगों में सँसार को जहाँ जाना है वहाँ त्रास दिया जा रहा है। आज मैं नाना पुरुषों की भविष्यवाणियों को भी श्रवण करता रहता हूँ। भविष्यवेत्ता कहते हैं कि इतने समय संग्राम हो करके यह समाज समाप्त हो जाएगा। यह वार्ताएँ चलती रहती हैं क्योंकि समाज को जब त्रास ही करना हुआ तो क्यों न भविष्य की वार्ता प्रकट करके कह दिया जाए कि यह समाज समाप्त हो जाएगा। अरे भोले प्राणियों यह समाज अपने समय पर जाता रहेगा। प्रभु का चक्र चलता रहेगा परन्तु तुम अपने अशुद्ध वाक्यों को प्रकट करके समाज को त्रास क्यों देते हो? इस वाक्य को कोई उच्चारण नहीं करता है कि ऐसे त्रास नहीं देना चाहिए। इससे मानव का आत्मबल समाप्त होता है। आत्म गौरव यह कहता है कि मानव को साहसी रहना चाहिए, अपने में सन्तुष्ट रहना चाहिए। समाज को सन्तुष्टि देता चला जाए। तो जहाँ यह वाक्य वेद के वाक्य कहते हैं वहाँ इस समाज को ऊँचे बनने के लिए अपनी मान्यताओं के ऊपर गम्भीरता से विचार-विनिमय करना चाहिए।

जहाँ मैं शिक्षा-प्रणाली की चर्चा कर रहा था, यह राष्ट्र की सूक्ष्मता है। राष्ट्र इसके ऊपर विचार नहीं कर रहा है कि हमारा मानव, हमारी आगे आने वाली जो सन्तति है, समाज है वह कहाँ जा रहा है। यहाँ समाज

का आहार और व्यवहार अशुद्ध बनता जा रहा है। दूसरे के रक्त को पान करने के लिए मानव अपने में गौरव स्वीकार करता है। जब शुद्ध आहार की चर्चा करते हैं तो कहते हैं कि वह समय तो वृद्ध हो गया है, वह समाज समाप्त होता चला गया। आजका मानव कहता है कि वह चन्द्रमा में चला गया है। चन्द्रमा में जाना कोई आश्चर्य नहीं। सूर्य में जाना भी कोई आश्चर्य नहीं। मंगल में जाना आश्चर्य नहीं है क्योंकि हमारे पूर्वज मंगल मण्डलों में रह-रह करके और उन्होंने शिक्षा पा करके विज्ञान का प्रसार किया परन्तु इस समाज को, मानव को चरित्र देना चाहिए। मानवीय दर्शन देना चाहिए। मानव दर्शन तब प्राप्त होता है जब विद्यालयों में आचार्य तपे हुए होते हैं। विद्यालयों में आचार्य सर्वत्र आयुर्वेद की विद्या को जानने वाले और उनके द्वारा मानवीय दर्शन होना चाहिए और उसको क्रियात्मक देना चाहिए तो यह समाज ऊँचा बन सकता है।

मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यही कहा करता हूँ कि भगवन्! वह समय दूरी चला गया है जब अश्वपति के यहाँ शिक्षा देते रहे। आजका समाज तो त्रासी बन गया है। आत्मा को सूक्ष्म बना रहा है, उसके बल को नष्ट कर रहा है अब मैं विशेष चर्चा प्रकट नहीं करूँगा। पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा। परन्तु विचार यह कि हम अपने विद्यालयों को, अपने गृह को अपनी पुत्रियों को महान् शिक्षा देते हुए हम गृहों में सुन्दर याग करते रहें। क्योंकि **शिक्षा देना भी एक महान् याग है जिससे मानव का आत्मबल ऊँचा बनता है।** विद्यालयों में पुत्रियों को महान् बनाना, शिक्षा दिलाना आयुर्वेद की विद्या माताओं में होनी चाहिए जिससे अपने पुत्र का निर्माण माता मदालसा की भांति अपने गर्भस्थल में कर सकें। इस प्रकार का राष्ट्रीय नियम हो तो यह समाज पूर्व की भाँति ऊँचा बन सके अन्यथा मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह कहा कि इस समाज में धीमी-धीमी अग्नि प्रचण्ड हो रही है। वह समय आने में दूरी नहीं है जब अपने हृदय की अग्नि से ही यह मानव अपने में समाप्त होता चला जाएगा। वह समय दूरी नहीं है। यह समाज धीमी-धीमी अग्नि के समुद्रों

के तट पर विद्यमान हो रहा है। विचारधारा में विकृतता आ गई है। जब इस प्रकार की विधारधारा बन जाती है तो समाज में अग्निकाण्ड प्रायः होते रहते हैं। आजका जो राष्ट्र, समाज, विद्यालय यह समाज को ऊँची जगह नहीं दे सकते। विज्ञान त्रासता में परणित हो रहा है। आजका वाक्य अब मैं समाप्त करने जा रहा हूँ।

यजमान को शुभकामना

पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाता हुआ आजका ये यजमान जिसे मैं दृष्टिपात कर रहा था, हे प्रभु! इनकी मनोकामना पूर्ण हो। उनका सौभाग्यी जीवन बना रहे। सौभाग्य अखण्डता को प्राप्त होता रहे। इसके पश्चात् अब हम अपने विचारों को विराम दे रहे हैं।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने कुछ विचार प्रकट किए। उन विचारों में राष्ट्रीयता और मानवता की प्रतिभा विद्यमान थी। विज्ञान की वार्ताएँ परम्परागतों से ही मानवीय मस्तिष्कों में रही हैं क्योंकि विज्ञान एक महानता को ले जाता है। परन्तु इन्होंने कुछ वाक्य ऐसे प्रकट किए जैसे विद्यालयों में मानवीय दर्शन का न रहना यह सौभाग्य नहीं, यह दुर्भाग्य कहलाता है। निर्माण शृंखला जब समाज से चली जाती है तो समाज में वर्ण शृंखला आ जाती है।

निर्माण शृंखला

निर्वाचन जितने भी होते रहे हैं वह सब विद्यालयों में होते रहे हैं। यह जो वर्ण-व्यवस्था का निर्माण, राष्ट्रीयता का निर्माण होना, आचार्यों का निर्माण होना यह सब विद्यालयों में प्रायः निर्माण होता रहा है। जितनी भी वर्ण-व्यवस्था प्रणाली है उसमें कौन ब्रह्मचारी ब्राह्मण बनेगा? कौन वैश्य बनेगा? कौन क्षत्रिय रक्षा कर सकेगा और जो इन तीनों कर्मों से वंचित रहता है उसको शूद्र संज्ञा प्रदान की जाती, जो शिक्षा अध्ययन नहीं कर

सकता वह सेवक बन करके अपने जीवन को व्यतीत करता है क्योंकि वह पठन-पाठन में अधूरा हैं। इसी प्रकार हमारे यहाँ निर्माण होते रहे। भगवान मनु ने इस राष्ट्र को, समाज को एक महान् दिशा दी और उस महान् दिशा का परिणाम विचारक पुरुषों के द्वारा हुआ। परन्तु वह विचारक न रहने से समाज में, विद्यालयों में निर्वाचन न रहना समाज का यह वर्ण शृंखला की एक प्रारम्भिकता हो जाती है इसीलिए जितने निर्माण हैं वह सब विद्यालयों में शिक्षा के माध्यम से होते हैं।

आजका वाक्य यह कह रहा है कि हम परमात्मा की उपासना करते हुए अपने जीवन को सार्थक बनायें। आज मैं भी जैसा महानन्द जी ने कहा, हे यजमान! तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। गृह में द्रव्य का सदुपयोग होना ही स्वर्ग माना है। आज कोई मानव स्वर्ग की कल्पना करता है तो द्रव्य का दुरुपयोग होना नर्क है और **द्रव्य का सदुपयोग होना स्वर्ग है।**

स्वर्ग की आभा

मानव द्रव्य के द्वारा याग करता है। दर्शनों का अध्ययन कर रहा है। देवताओं की सभा में, बुद्धिमानों की सभा में परणित हो रहा है और अपने कार्य कुशल में भी महत्ता है तो वह द्रव्य का सदुपयोग हुत कर रहा है, अतिथि यज्ञ कर रहा है, उसी द्रव्य के द्वारा वह राष्ट्र को एक महान् दिशा दे रहा है—यह सब स्वर्ग की आभा कहलाती है। द्रव्य का दुरुपयोग होना, जितने अचरित्रवादी कर्म हैं, द्रव्य का दुरुपयोग होने से समाज उसको धिक्कारता है और उसको नारकिक कहता है। उसका अपना अन्तरात्मा भी उसको नारकीय कह रहा है। एक मानव सुरापानी है तो उसका अन्तरात्मा भी उसे धिक्कार रहा है। एक मानव द्रव्य के बल पर दूसरों क सतीत्व को नष्ट कर रहा है तो अन्तरात्मा उसे धिक्कार रहा है। उस आभा को वह कहाँ से प्राप्त करेगा? दूसरे के द्रव्य को हनन करके उसका दुरुपयोग करता है तो उसका अन्तरात्मा

धिक्कारता है। **इस अन्तरात्मा की वार्ता को मानना ही देवता बनना है। अन्तरात्मा की प्रेरणा को स्वीकार करना ही मानव को देवपुरी में जाना है।** उसकी दिशा देवताओं के मार्ग को चली जाती है। प्रभु ने जीवन दिया। शरीर का निर्माण किया किसने? प्रभु ने माता के गर्भस्थल में किया है। माता के गर्भस्थल में निर्माण हुआ। माता को यह प्रतीत नहीं है गर्भस्थल में पुत्र होगा या पुत्री। माता उसे वंचित है। वह वंचित क्यों है? क्योंकि माता ने उसका निर्माण नहीं किया, माता उसे भावना दे सकती है परन्तु उसका निर्माण नहीं कर सकती। बुद्धि का निर्माण मुझे कहाँ करना है? मुझे कौन सी नस-नाड़ी कहाँ निर्माणित करनी है? इंगला, पिंगला, सुषुम्णा नाड़ी कहाँ से चलती है और कहाँ समाप्त होती है? ब्रह्मरन्ध्र कहाँ रहता है माता यह नहीं उच्चारण कर सकती, विचार दे सकती है। इसलिए इसका निर्माण किसने किया है? माता के गर्भस्थल में प्रभु ने किया है। इसीलिए जो प्रभु ने निर्माण किया है। स्वर्ग की कामना, वेद का प्रकाश दिया है उस प्रकाश में रहना और द्रव्य का उपार्जन करना, उसका सदुपयोग करना यह उसका स्वर्ग बन जाता है।

बेटा! यह है आजका वाक्य। अब मुझे समय मिलेगा तो शेष चर्चाएँ हम कल प्रकट करेगें। आजका वाक्य समाप्त, अब वेदों का पाठ होगा।

वेदपाठ. . . . . .

अच्छा भगवन्! आज्ञा

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

दिनाँक : 29 जनवरी, 1982
स्थान : चौ. धर्मपाल सिंह
सुवाहेड़ी, बिजनौर

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. जितना भी विज्ञान है यज्ञवेदी के आधार पर ही उसका निकास होता है।
2. भौतिक विज्ञान आध्यात्मिकवाद का भोजन है।
3. मुख है यह भी तो यज्ञवेदी ही है।
4. मानव का तो एक ही कर्म है यज्ञ। यज्ञ से ही मानव का मन पवित्र होता है।
5. मानव आज तुझे सात्विकता और महानता को अपनाना है तो यज्ञों का करना ही तुम्हारे लिए सर्वत्र श्रेष्ठ माना गया है।
6. वेद के अनुकूल हृदय योगियों का हुआ करता है।
7. यज्ञ में जब विधि महान होती है, अन्तकरणीय होती है और सुदृढ़ होती है तो उस यज्ञ में मानो देखो उसकी आभा सदैव ओत-प्रोत हो जाती है।
8. यज्ञ में सबसे प्रथम ब्रह्मा होता है, उसके पश्चात् यजमान होता है, अध्वर्यु और उद्‌गाता होता है।
9. यज्ञशाला में इतनी अग्नि प्रदीप्त होनी चाहिए समिधाओं के द्वारा कि जितना शाकल्य हो उसकी ऊर्ध्वागति हो जाए।
10. समिधा का अभिप्राय यह है कि प्रत्येक वेद-मन्त्र के साथ में उसका अग्नि से मिलान होना चाहिए।
11. यजमान का केवल एक कर्त्तव्य होता है आहुति देना और संकल्प ऊँचा बनाना और नेत्रों की दृष्टि किसी ओर आँगन को न जाना केवल वह जो ऊर्ध्व अग्नि है उसकी ज्योतियों पर दृष्टिपात करना चाहिए।
12. मानव शरीर में इन्द्रियाँ होता बनी हुई हैं। प्राण और मन उद्‌गाता और अध्वर्यु के रूप में विराजमान हैं, आत्मा इस शरीर में यजमान के रूप में विराजमान है और परमपिता परमात्मा ब्रह्मा के रूप में कार्य कर रहा है।

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	80.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	60.00
4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	60.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	80.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
9.	धर्म का मर्म	40.00
10.	शंका-निवारण	30.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	125.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	125.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	125.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00
19.	महाभारत के रहस्य	30.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	50.00
22.	महाराजा-रघु का याग	30.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	35.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	35.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	35.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	40.00
29.	याग-मन्जूषा	40.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	30.00
32.	याग और तपस्या	60.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	35.00
35.	याग-चयन	40.00
36.	दिव्य-रामकथा	120.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	35.00
38.	दिव्य-ज्ञान	40.00
*39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	90.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	40.00
41.	आत्म-उत्थान	40.00
42.	तप का महत्व	40.00
43.	अध्यात्मवाद	40.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	40.00
45.	वैदिक-प्रभा	35.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	40.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	35.00
50.	आत्मा का भोजन	40.00
51.	साधना	35.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	80.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	40.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	80.00
57.	माता मदालसा	50.00
58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	80.00
59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	80.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	80.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	80.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएं	50.00
65.	प्रभु-दर्शन	50.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	80.00
67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	80.00
*69.	ब्रह्म की ओर	50.00
70.	ईश्वर मिलन	50.00
71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	80.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैः–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी, सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-2642052
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री विवेक त्यागी, 16ए, अशोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0122-2316196
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097117
13. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23282088
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे.पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

।। ओ३म् ।।

। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

राष्ट्र कल्याणार्थ चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ एवम् योग साधना शिविर

दिनांक 25 दिसम्बर 2016 रविवार से 1 जनवरी 2017 रविवार तक

–: निमन्त्रण पत्र :–

प्रिय आत्मीय स्वजनों,

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (पूर्व जन्म के शृङ्गी ऋषि जी) की पावमानी प्रेरणा से प्राणी मात्र के जीवन को तीव्रता से बढ़ते हुए प्रदूषण से निवारण करने के लिए और जीवन सत्ता को सम्पन्न बनाने के लिए **''चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ''** का आयोजन **''याग प्रचार समिति''** ग्राम खरखौदा द्वारा आप सबके सहयोग से अत्यन्त श्रद्धा व हर्षोल्लास से पाँच यज्ञवेदियों पर वैदिक परम्परा आदि ऋषियों द्वारा निर्धारित कर्मकाण्ड पद्धति अनुसार सम्पन्न होगा। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि इस महायज्ञ में प्रातः से सायं समयानुसार अपने परिवार, सम्बन्धी व मित्रों सहित उपस्थित होकर तन, मन, धन से आहुति प्रदान करके अपने जीवन के मार्ग को प्रशस्त करते हुए, जीवन में आने वाले उद्देश्य की ओर अग्रसित होते हुए ऊर्ध्वागति में संलग्न रहें।

यज्ञ के ब्रह्मा – आचार्य श्री गुरुवचन शास्त्री जी, लाक्षागृह, बरनावा।

आचार्य एवम् वेदपाठी – श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय लाक्षागृह, बरनावा के ब्रह्मचारीगण।

आमन्त्रित पूज्यनीय सन्यासी – महामण्डलेश्वर स्वामी असङ्गानन्द जी महाराज, परमार्थ निकेतन ऋषिकेश।

आमंत्रित विद्वतगण – श्री माया प्रकाश जी, श्री विनोद कुमार शास्त्री प्रधानाचार्य।

–: कार्यक्रम :–

दिनांक 25 दिसम्बर 2016 से 31 दिसम्बर 2016 तक

प्रातः 7:15 बजे ओ३म् ध्वजारोहण (प्रथम दिवस) एवम् ब्रह्मयज्ञ (संध्या)

प्रातः 8:00 बजे से **11:15 बजे** तक यज्ञ व प्रवचन

सायं: 2:15 बजे से **5:15 बजे** तक यज्ञ व प्रवचन

दिनांक 1 जनवरी 2017 प्रातः

प्रातः 8:00 बजे से **11:00 बजे** तक यज्ञ और महायज्ञ की पूर्णाहुति तत्पश्चात् प्रवचन एवं आर्शीवाद शान्ति पाठ व ब्रह्मभोज।

निवेदक

समस्त खरखौदा निवासी

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

वसुन्धरा के नाना पर्यायवाची हैं, जैसे वसुन्धरा पृथ्वी को कहते हैं जो नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थों को प्रदान करने वाली है, वह वसुन्धरा, जिसके गर्भ में हम नाना प्रकार की वनस्पतियों के द्वारा पनपते रहते हैं। तो इसीलिए हम उस माता को वसुन्धरा कहा करते हैं। जब हम यह विचारने लगते हैं कि मानव जीवन से उसका घनिष्ठ सम्बन्ध है जब हम यह विचारने लगते हैं, तो हमारा हृदय विशालता को प्राप्त होने लगता है, जब हम अपने मन में यह अनुभव करते हैं, अपने हृदय में स्वयं यह अनुभव करते हैं कि वह तो वास्तव में महामना है, वह माता महामना है। हमारा कल्याण करने वाली है।

पूज्यपाद-गुरुदेव